तेल की कम कीमतों से होने वाले भारत के लाभ खतरे में

प्रश्न पत्र : III

विषय: भारतीय आर्थिक विकास, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, ओपेक तेल समझौता, भारत पर प्रभाव।

यूपीएससी की प्राथमिक और मुख्य परीक्षा में लेख की प्रासंगिकता: यह लेख हाल ही में तेल उत्पादन ओपेक संगठन देशों के बीच कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव को स्थिर करने के लिए तेल उत्पादन हेतु हुए समझौते विषय में है। हालांकि इस निर्णय ओपेक राष्ट्रों के लाभ को ध्यान में रख कर किया गया है, लेकिन यह खपत आधारित अर्थव्यवस्थाओं पर इसके कई प्रभाव हो सकते है, जिनमे से एक भारत भी है, पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) ने प्रति दिन 325 लाख बैरल तेल का उत्पादन करने का लक्ष्य रखा है। ओपेक सितंबर के अंत में उत्पादन में कटौती करने के लिए अपने इरादे की घोषणा की थी, जिससे कच्चे तेल की कीमतों में समरूपता एवं स्थिरता प्रदान की जा सके। लेकिन खबरे यह भी है कि कुछ पुराने ओपेक देशों के बीच विवाद उत्पन्न हो गया है, जिससे इस संगठन के समझौतों के नाजुक प्रकृति के होने की भी चर्चा की जा रही है, तथ्य यह है कि एक सौदा तय होना एक सकारात्मक विकास है। तेल बाजार के पुनर्संतुलन और और आगे को भी सुनिश्चित कर सकता है। लेकिन निश्चित तौर पर ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि इससे तेल की कीमतों में एक बार फिर से स्थिरता आ ही जाएगी।

परिचय:

- आज कल सार्वजनिक बहस काफी हद तक सरकार की चल रही मुद्रा विनिमय और इसके आर्थिक प्रभाव पर के विषय पर हो रही है लेकिन एक और मुद्दा है जिस पर उतनी ही गंभीरता से ध्यान केंद्रित किया जाना महत्वपूर्ण है। बुधवार को भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति पर अगर प्रकाश डाला जाता है तो पता चलता है की आने वाले महीनों में कच्चे तेल की कीमतों में इजाफा हो सकता है और साल के अंत में यह मुद्रास्फीति लक्ष्य के लिए एक खतरा उत्पन्न कर सकता है।
- तेल की कीमतों में सोमवार को एक 16 महीने के उच्चतम स्तर को छुआ और 29 नवंबर के बाद 15% से अधिक का उसमे उछाल भी देखा गया है। यह 30 नवंबर को पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) आठ साल में पहली बार के लिए उत्पादन में कटौती के बाद कीमतों में तीव्र बढ़ोत्तरी के रूप में देखा गया है। इससे जनवरी 2017 से प्रति दिन तेल उत्पादन 1.2 मिलियन बैरल काम हो जायेगा। रूस सहित गैर-ओपेक के सदस्यों से, प्रति दिन एक और 600,000 बैरल तेल की कटौती की उम्मीद भी की जा रही हैं।

इस फैसले के अभिविन्यास:

- यह निर्णय कई तेल निर्यात पर निर्भर देशों में एक आपूर्ति भरमार के होने के महत्वपूर्ण कठिनाई के दो साल बाद आया है। उदाहरण के लिए, जबकि सऊदी अरब जैसे देश का विदेशी मुद्रा भंडार घट गए है, इसके कारण वेनेजुएला जैसी अर्थव्यवस्था लगभग ढहने की कगार पर पहुँच चुकी है और इसे उच्च मुद्रास्फीति के साथ आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी का सामना करना पड़ रहा है।

- हालांकि, मध्यम अवधि में समझौते के वास्तविक प्रभाव इसके कार्यान्वित करने के तरीके पर निर्भर करेगा है और क्या ओपेक इस समझौते पर निर्माण करने में सक्षम है हो सकेगा। ज्यादातर विश्लेषकों का मानना है कि तेल की कीमतों कई कारणों के उच्च स्तर पर बनाई नहीं रखी जा सकती हैं।
- इनमे से एक यह है कि, वैश्विक तेल मांग कमजोर बनी हुई है और विकास के निकट भविष्य में इसमें तेजी आने की संभावना नहीं है। इसके अलावा, उच्च स्तर पर, अमेरिका के तेल उत्पादन जिसे कम कीमतों की वजह से, नुकसान उठाना पड़ा रहा है एक बार फिर इसकी तरफ खपतकर्ता देशों का ध्यान इसकी तरफ आकर्षक हो जाएगा। इसके अलावा, ओपेक सदस्यों आदेश में उच्च कीमतों का लाभ लेने के लिए धोखा देने की प्रवृत्ति है। यहां तक कि अगर ओपेक अपने सदस्यों के उत्पादन के स्तर पर नजर रखने के लिए सक्षम भी हो जाता है, तो रूस जैसे गैर सदस्य देश की पहचान करना मुश्किल हो जाएगा।

निर्णय के मुख्य प्रभावकर्ता:

- लेकिन क्या इस स्तर पर शायद यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि ओपेक वास्तव में एक समझौते पर गैर-सदस्यों के समर्थन के साथ उत्पादन में कटौती करने में कामयाब रहा है। अभी हाल तक, ओपेक के सबसे प्रभावशाली सदस्य सउदी अरब उत्पादन को कम करने के लिए राजी नहीं हो रहा था क्योंकि वह अन्य उत्पादकोंकी तरह बाजार में हिस्सेदारी को कम नहीं करना चाहता था। लेकिन एक बिगड़ती आर्थिक स्थिति ने उसे एक पुनर्विचार के लिए मजबूर कर दिया है। एक अन्य कारण इस स्तर पर सऊदी अरब के इष्टतम रणनीति उत्पादन में कटौती करने और कीमतों में वृद्धि के रूप में सबसे अन्य ओपेक के सदस्यों वर्तमान उत्पादन, जो धोखाधड़ी के दायरे को सीमित करता है बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं करने के लिए है।
- कैसे चीजें वास्तव में कार्य करेंगी वास्तव में पूरी दुनिया में देखीं जा रही है। ऐसा माना जा रहा है कि ओपेक कम से कम तेल की कीमतों को कर सकता है यह लगभग $ 40 तक रहने की संभावना है। कुछ विश्लेषकों जो कि कीमतों की भविष्यवाणी प्रति बैरल $ 10 के आसपास कर रहे है उनके हिसाब से यह और भी काम रहने की संभावना है।

इराक अंतिम मिनट की अड़चन

- लेकिन ओपेक जब तक ओपेक नहीं रहेगा जब तक वह एक आखिरी मिनट तक इराक से झगडे की संभावना को समाप्त नहीं कर देता है। इराक एक समस्या बन गया। मसलन इराक, ओपेक का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और इस्लामी राज्य के खिलाफ युद्ध की स्थिति में अपना उत्पादन काम नहीं कर सकता है।

भारत को इससे लाभ या एक पराजित:

- भारत में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का एक प्रमुख फायदे वाला देश था जो अपनी आवश्यकता का 75% से अधिक के लिए आयत पर निर्भर करता है। जहां एक ओर, कम कीमतों चालू खाते के घाटे से युक्त और मुद्रास्फीति को कम करने में मदद करती है, दूसरी ओर यह राजस्व-संवर्धित सरकार पेट्रोलियम उत्पादों जो

राजकोषीय घाटे को सीमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है पर उच्च करों को लागू करने का अवसर भी प्रदान करता है। पिछले वित्त वर्ष में अप्रत्यक्ष कर राजस्व 54,000 करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान किया गया था।

- हालांकि, अगर तेल की कीमतों में वर्तमान स्तर पर बनाए रखने या ऊपर जाती है, उन लाभ के कुछ हद तक उलट सकते है। जब तेल की कीमतें 2014 में नीचे आ गयी थी, अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि हर $ 10 प्रति बैरल तेल की कीमतों में गिरावट आधारित मुद्रास्फीति कम कर देता है थोक मूल्य सूचकांक और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में 0.5 और 0.2 प्रतिशत अंकों की गिरावट ला सकती है।
- चालू खाते के घाटे पर असर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 0.5% है और यह सकल घरेलू उत्पाद के 0.1% से राजकोषीय संतुलन में सुधार के लिए भी जिम्मेदार है। एक मूल्य के पलटने से इस पर एक विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना है।

निष्कर्ष:

- कीमतों में वृद्धि जारी रहती है, तो सरकार पेट्रोलियम उत्पादों पर कर वृद्धि का एक हिस्सा वापस लेना पड़ सकता है। यह सरकार की क्षमता के पूंजीगत व्यय को बढ़ने के सरकार के गणित को प्रभावित करेगा।
- निजी खपत भी उच्च ईंधन बिल से प्रभावित हो सकती है। इसलिए उच्च तेल की कीमतों आर्थिक विकास- सरकारी खर्च और निजी उपभोग के दो महत्वपूर्ण कारकों को प्रभावित कर सकती हैं।
- कंपनियों जो कि कम तेल की कीमतों से लाभ ले रही थी भी उपभोक्ता को ज्यादा इनपुट लागत में जाने की वजह से प्रभावित हो सकती है ऐसा वह लाभ को कम होने पर कर सकती हैं। वास्तव में, तेल की कीमतों भारत में ऐसे समय में प्रभाव दाल सकती है जब भारत में आर्थिक गतिविधियों मुद्रा की कमी की वजह से काफी काम हो गयी है।
- उच्च तेल की कीमतों में भी चालू खाते को भी बढ़ा सकती है, जबकि डॉलर के मजबूत बनाने की वजह से रूपया दबाव की स्थिति में है।
- हालांकि तेल की कीमतों अभी खतरे के स्तर पर नहीं पहुंची है, भारतीय नीति निर्धारित को तेल की कीमतें में अंतर्निहित बदलाव के लिए तैयार रहना चाहिए और इस दिशा में अभी से नीति निर्माण का कार्य शुरू कर देना चाहिए।

प्राथमिक परीक्षा के लिए प्रश्न:

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) के पांच देशों अर्थात् ईरान के इस्लामी गणराज्य, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला द्वारा सितंबर 1960 में एक समझौते पर हस्ताक्षर के साथ बगदाद, इराक में स्थापित किया गया था।
2. ओपेक सचिवालय पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (ओपेक) के कार्यकारी अंग है यह वियना में स्थित है।

निम्न में से कौन सा कथन सत्य है:

A. **केवल 1**

B. **केवल 2**

C. **1 और 2 दोनों**

D. **उपरोक्त में से कोई भी सत्य नहीं है।**

मुख्य परीक्षा के लिए प्रश्न:

पिछले 2 वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में चल रही गिरावट के दौर से काफी लाभप्रद थी लेकिन ओपेक देशों द्वारा हाल ही तेल के उत्पादन को स्थिर करने का एक सर्वव्यापी फैसला किया है जिससे कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि होने के बड़े आसार है, कच्चे तेल की कीमतों में भारी वृद्धि से भारत को कैसे प्रभावित होगा और उच्च तेल की कीमतों में सरकार तथा निजी उपभोग खर्च को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है। चर्चा कीजिये।

उत्तर हेतु सुझाव बिंदु:

1. **ओपेक देशों के हाल के निर्णय से अंतरराष्ट्रीय बाजार में बराबर मूल्य लेबल बनाए रखने के लिए उत्पादन के लेबल में कटौती करने के बारे में चर्चा करें।**
2. **इस दर में कटौती के पीछे ओपेक देशों की रणनीति।**
3. **क्या भारत इससे पहले की स्थितिके लाभ ले रहा है।**
4. **भारत का इस निर्णय पर प्रभाव।**
5. **इस फैसले से सरकारी खर्च और निजी उपभोग के स्तर के विषय में चर्चा करें।**
6. **बजटीय उपायों की समीक्षा।**
7. **इस निर्णय की व्यवहार्यता।**
8. **इस मामले में भारत को क्या करना चाहिए। रणनीति।**
9. **सुझाव**
10. **निष्कर्ष।**

लिंक: http://www.livemint.com/Opinion/yKIdQnNCyHcoEhRqtKdmVN/Indias-gains-from-lower-oil-prices-at-risk.html

---